आंतर - भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
अॅड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंध संपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी - 413 522 (महा.)
ईमेल-antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी - विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल-editorbabuji@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्य संपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
गंगाधर घुमाडे • ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बाराव • मुकुंद कुलकर्णी • मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य •गोपाल सत्पुरे

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा **साईराम ग्राफीक्स**, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में...

संपादकीय -	बलात्कार और भ्रष्टाचार की संस्कृति को बदलने के प्रति क्या सचमुच हम निष्ठावान हैं ?	५
आंतर भारती - १	तुका म्हणे	८
आंतर भारती - २	बसव वचन	९
आंतर भारती - ३	तिरुवल्लुवर वाणी	११
काव्य भारती - १	पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल	१२
संस्मरण भारती - १	जीवन साधना	१३
कथा भारती - १	संघर्ष और सफलता की गाथा बराक ओबामा	१५
पत्र भारती-१	विद्या के. चिटको	१७
बाल भारती - १	चतुर मित्र	१८
चिंतन भारती - १	मिश्र विवाह के दिन आये, दिन कितने सुहाने आये	२०
विशेष आलेख -१	स्त्री आंदोलन की शोकान्तिका	२४
चिंतन भारती - २	जाति व्यवस्था निर्मूलन की दिशा में एक कदम	२७
परिचय भारती - ३	दुर्गम भारत जोडो	३०
समाचार भारती-१	राष्ट्र सेवादल के शिविर द्वारा विद्यार्थियों पर संस्कार	३२
समाचार भारती-२	तेलुगु साहित्यकार डॉ.रावुरी भारद्वाज को ज्ञानपीठ पुरस्कार	३३
समाचार भारती-३	बालमहोत्सव वडोदरा	३४

संपादकीय...

बलात्कार और भ्रष्टाचार की संस्कृति को बदलने के प्रति

क्या सचमुच हम निष्ठावान हैं ?

आजकल अखबारों के पन्नों की सामग्री, टीवी के समाचार चैनलों, इंटर्नेट के समाचार पोर्टलों के समाचार, दृश्यों-चित्रों, कार्यक्रमों में ५०% से अधिक भ्रष्ट संस्कृति प्रतिबिंबित हो रही है. इस पर रोक लगाने के लिए शासन व्यवस्था के अंतर्गत कई अभिकरण, कई आयोग, कई समितियाँ, अदालतें हैं, मगर दिन दस गुनी, रात पचास गुनी अपराध व घूसखोरी की संस्कृति बढ़ती जा रही है. नशाखोरी, कामुकता, स्वार्थ, दुराशा, भोगवाद आदि अनैतिक संस्कृति के पोषक हैं. शराब पीना, जुआ खेलना, धूम्रपान, घूसखोरी को शौकीन लोगों की, बॉस सभ्यता की देन के रूप में समाज में लगभग स्वीकृति मिल चुकी है. इनकी वजह से उत्पन्न दुरवस्था-अव्यवस्था पर रोक के लिए कमर कसने के बहाने आए दिन कोई न कोई कठोर कानून और किसी एकाध घटनाओं में आरोपियों के प्रति तुरंत कार्रवाई और कठोर सजा की मांग की खबरें, राजनीतिक दाव-पेंच आदि आम हो चुकी हैं. हर मामले में कहीं लीपा-पोती की कार्रवाई ही की जाती है, उसके कई अन्य पक्षों पर चिंता और चिंतन से हम कोसों दूर रह जाते हैं. दर्दनाक दुष्कर्मों, दुर्घटनाओं के विरुद्ध उठने वाले जनाक्रोश, उभरनेवाले जनांदोलनों को सह दिशा नहीं मिल पा रही है.

महिला उत्पीड़न पर रोक लगाने के लिए बढ़ती मांग को ध्यान में रखकर कड़ी सज़ा की व्यवस्था करते हुए कानून बनाया जा चुका है पिछले दिनों में. कानून, चाँच और न्यायिक कार्रवाई का तब तक कोई महत्व नहीं, जब तक अपराधिक प्रवृत्तियों की जड़ों को पहचानने की कोई कोशिश नहीं की जाती है. आज अखबार और टीवी पर्दों के लिए सनसनीखेज खबरें दिल्ली और देश के अन्य प्रांतों में लगातार बढ़ रहे बलात्कार के मामले और विशेषकर मासूम बच्चियों पर दुष्कर्म की शर्मनाक एवं दर्दनाक घटनाएं ही बन गई हैं. दिल्ली की खबरें आमतौर पर खास खबरें बन जाती हैं. बाकी प्रांतों की खबरें वैसे उपेक्षित रहती थीं, मगर विगत चार-पाँच महीनों में महिलाओं के खिलाफ अपराध पर रोक के लिए उत्पन्न चेतना व ऐसी घटनाओं की बढ़ती संख्या के मद्देनज़र आक्रोष की वजह से अखबारों में बलात्कार समाचारों के लिए ही कुछ पृष्ठ सुरक्षित होते जा रहे हैं, यह एक निष्ठुर विडम्बना है. कानून को मज़बूत बनाने और पुलिस को सतर्क करने के आश्वासनों और कार्रवाइयों के बाद भी ऐसे आरोप जाहिर हैं कि पीड़ितों की शिकायत दर्ज करवाने के लिए बड़ी परेशानी उठानी पड़ रही

है और उनकी सहन शक्ति की परीक्षा भी हो जा रही है. बढ़ती अपराधिक प्रवृत्ति, बलत्कार और भ्रष्टाचार की संस्कृति पर नियंत्रण व रोकथाम के लिए जरूरी कदम उठाने और जरूरी चिंतन करने से कतराकर लगभग हम कानूनी-व्यवस्था और आदलती कार्रवाहियों पर ही नज़र टिकाए बैठ जाते हैं. बसों, रेलों में अपराधिक घटनाओं पर नियंत्रण के लिए सी.सी.टी.वी. लगाने पर सोचा जाता है मगर पुलिस के पास शिकायत व एफ.आई.आर. के लिए ऑनलाईन या एस.एम.एस. के माध्यम से शिकायत लेने की प्रक्रिया शुरु करने की क्यों न सोची जा रही है ? जब मृत्युदंड की भी परवाह न करते जगन्य अपराध करने में तुले हुए लाखों की संख्या में अपराधी, करोड़ों की संख्या में घूसकोर पाए जा रहे हैं तो जाँच-पड़तालकर इन्हें सज़ा देने के लिए पुलिस बल और कोर्ट-कचहरी भी कम पड़ रहे हैं. किन्हीं मामलों में भड़के जन-आक्रोष, राजनीतिक दबाव की वजह से यदि फॉस्ट ट्रैक कोर्ट जैसी व्यवस्था भले ही हो जाए, जो अन्याय से पीड़ितों के प्रति घट जाता है, वह अपराधी को मृत्युदंड मिल जाने से भी क्या मिट सकता है या सच्चे मानवीय अर्थों में न्याय कहला सकता है ? विगत १५ अप्रैल को दिल्ली के गांधी नगर में ५ साल की एक मासूम बच्ची पर बलात्कार की घटना और तत्पश्चात की परिस्थितियों की खबरों से अखबार के पन्ने भरते जा रहे हैं, उधर टीवी के पर्दे भी गरम हैं और इंटरनेट के पन्ने सैकडों प्रविष्टियों से भरते जा रहे हैं और हिट्स भी बड़ी संख्या में दर्ज हा रहे हैं. इस मामले में इस समय तक पकड़े गए दो आरोपियों के चरित्र और बलात्कार के समय उनकी स्थिति के संबंध में प्रकाशित खबरों से स्पष्ट है कि दोनों आरोपी मासूम बच्ची पर कुकर्म करते वक्त नशे में थे और अपनी मोबाइल में अश्लील वीडियो के अनुकरण में अमानवीय कृत्य कर दिए थे.

आज अश्लीलता आम संस्कृति बन रही है. आए दिन नशे में आनंद लेनेवालों की संख्या भी बढ़ रही है. बढ़ती अपराधिक, भ्रष्ट संस्कृति के ये भी कारण हैं. नशाबंदी की दिशा में कुछ सरकार प्रयास करके असफल रह गई हैं. इस असफलता का मूल कारण कहीं शराब बेचने की आमदनी को सरकारों द्वारा महत्व दिया जाना भी एक कारण है तो दूसरी और इन शराब दुकानों और घूसकोरों से कई नेता, गुंडे लोग पोषित होते नज़र आते हैं. ऐसे भ्रष्ट नेताओं की पूजा करने, उन पर निर्भरता ने जिस अमानवीय संस्कृति व सभ्यता को जन्म दिया है उस ओर किसी बुद्धिजीवी का ध्यान नहीं जा रहा है. बुद्धिजीवी कभी-कभी ध्यान देकर, आपत्ति उठाकर भी अक्सर बिक जाते हैं. गुजरात जैसे नशाबंदी सफल राज्यों का उदाहरण लेने पर तथाकथित बुद्धिजीवी यह सवाल खड़ा करते हैं कि वहाँ भी अपराधी घटनाओं की क्या कमी है. मगर शराबियों के दुष्कर्मों और अपराध प्रवृत्ति पर रोक की चिंता किसे है ? गिनेचुने

तथाकथित बुद्धिजीवी, लेखक व पत्रकारवर्ग भी (जिनका निर्णय व शासन नीति में बड़ी भूमिका भी होती है) नशा को हर वक्त पर निमंत्रण देते हुए कई बार अपने अपराधों को अपनी प्रतिष्ठा के बलबूते छिपाने की कोशिश करता रहता है. शराब व्यापार को बंद करने के संबंध में उस व्यापार पर आश्रित लोगों को बेरोजगार हो जाने का निरर्थक रागालाप भी करता रहता है, इसे बंद करने पर कोई विकल्प नहीं सोचा जाता है. उधर अखबार और टीवी के पर्दे भी अश्लील विज्ञापन परोसने में कतराते तक नहीं, मुख्यतः इंटरनेट जहाँ ज्ञान का सिंधु है, वही अश्लील दृश्यों, अश्लील साहित्य व अपराधिक व्यापार का बड़ा साम्राज्य भी है. ऐसे में अखबारो के पोर्टलों के होमपेज भी अश्लील चित्रों, विडियों के अड्डे बनकर दूसरी ओर वैचारिक लेखों को परोसकर दर्शकों, पाठकों के विवेक पर छोड़ रहे हैं. अखबारों की बाजारवादी संस्कृति का यह बड़ा दुष्परिणाम है. जब तक अनाचारी सभ्यता पनपती रहेगी तब तक बढती अराजकता, नैतिक पतन से समाज को क्षोभित होते रहना ही पड़ेगा. इसे रोकने में कानून सीमित भूमिका ही निभा सकती है. शासन तंत्र की निष्ठापूर्ण चेतना और जनता व मीडिया के विवेक से परिवर्तन संभव है. महिला उत्पीड़न पर रोक के लिए पूरी निष्ठा के साथ समाज-परिवर्तन की दिशा में हर जरूरी कदम उठाने के लिए हमें तत्पर कार्रवाई करने की आवश्यकता है. शिक्षा क्षेत्र में भी नैतिक विकास पर बल देने की चेतना शिक्षकों तथा अभिभावको में भी खत्म होती नज़र आ रही है. शिक्षा किसी भी स्तर पर मानवीय मूल्यों से मुक्त न हो, इस ओर तुरंत कदम उठने की जरूरत है. कानूनी स्तर पर कार्रवाई होकर अपराधियाँ को सजा मिलते रहने के बावजूद यदि इसका कोई असर समाज की अपराधिक प्रवृत्ति पर नहीं है तो कानून महज कागज ही साबित हो जाता है. इसके एक जीवंत उदाहरण के रूप में दहेज-प्रथा से महिला उत्पीड़न की चर्चा ठंडी पड़ चुकी है, क्योंकि बडे से बडे प्रशासक, राजनेता, पुलिस अधिकारी, न्यायाधीश आदि भी दहेज के लेन-देन से नहीं बच रहे हैं. ऐसे में कानून को कोसना विचित्र बात-सी लगती है. समाज परिवर्तन के लिए कर्मठ नागरिकों की जरूरत है, जिनकी मानवीयतापूर्ण समाज की स्थापना की दिशा में सच्ची संकल्पना एवं निष्ठा हो.

'आंतर भारती' के स्वप्नद्दष्टा साने गुरुजी और यदुनाथ थत्ते जैसे कर्मठ मनीषी इसी तरह की संकल्पनाओं से समाज के हित में लगे रहे हैं. उनके त्याग और उनकी सच्ची निष्ठा के यादगार में हर साल 'आंतर भारती' द्वारा १० मई को आयोजित होनेवाला समारोह इस वर्ष गोवा में आयोजित हो रहा है, कार्यक्रम में शामिल होनेवाले सभी कार्यकर्ताओं का अभिनंदन सहित कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामनाएँ...

- डॉ.सी.जय शंकर बाबु

आंतर भारती - १

तुकाम्हणे

(मराठी)

अणुरणीया थोकडा । तुका आकाशाएवढा ।

अणुरणीया थोकडा । तुका आकाशाएवढा ॥१॥
गिळुनि सांडिले कळिवर । भव भ्रमाचा आकार ॥२॥
सांडिली त्रिपुटी । दीप उजळला घटी ॥३॥
तुका म्हणे आतां । उरलों उपकारा पुरता ॥४॥

हिन्दी भावानुवाद :

'सूक्ष्म भी है, स्थूल भी'

अणु से सूक्ष्म, सूक्ष्म रेणु से हुआ है, तुका आत्मत्व पाकर ।
नभ के सम विशाल भी वह है ब्रह्मलीन, ब्रह्ममय होकर ॥१॥
भव भय को, माया-संशय को त्याग गया वह परे देह से ।
आत्मरूप पहचाना जब से, देहभावना मिटी है तब से ॥२॥
ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञान त्रिपुटी को, तोड हुआ निर्द्वन्द्व जगत् में ।
आत्मज्ञान का दीप जल उठा, हुआ उजाला अंतरमय में ॥३॥
तुका कहे अब तुका नहीं है, अग-जग से वह दूर गया है ।
शेष अभी जो तन है वह तो, जन-जन के उपकार हेतु है ॥४॥
मधुर सरस प्रिय इतने हैं हम, अमृत भी शायद होगा कम ।
कडुअे किन्तु हम जन हैं इतना, विष बेचारा क्या होगा उतना ॥५॥
तुका कहे हम बाहर-भीतर, सभी ओर से मधुर ही मधुर ।
जो जितना सनेह चाहेगा, हमसे वह उतना पायेगा ॥६॥

हिन्दी : प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार
परिमल २८/८१, विद्या नगर, उस्मानाबाद (महा.).

English Translation

Smaller than atom and expansive as the sky
Anuraniyaan thokadaa tukaa akaashaa ehwhadaa

Smaller than the atom
And as vs vast as the sky.
TUKA has overcome the illusion of the transient.

Having dissolved the concept of Triputy, Knower,
Knowledge and Art of Knowing.
And lighted the lamp of Eternity.
Sayas TUKA, hereafter his life is only for serving others.

1. Vishnu - Lord Vitthala

English : D.S.VAJRAM
3, Praram, Lakaki Rasta, Pune - 411016

आंतर भारती - २

बसव वचन

मूल कन्नड वचन -

पापिय धन प्रायश्चित्तकल्लदे
सत्तपात्रक्के सल्लदय्य
नायियहालु नायिगल्लदे
पंचामृतक्के सल्लदय्य
नम्म कूडलसंगम शरण रिगल्लदे
माडुवदर्थ व्यर्थ कंडय्य

हिंदी काव्यानुवाद :-

पापीयों का धन उत्तम कार्यों के काम नहीं आता ।
उसे प्रायश्चितही करना पड़ता हैं ।
कुतिया का दुध उसके पिल्लों को छोड़कर ।
पंचामृत के काम नहीं आता ।
हमारे कूडलसंगम देव के शरणों को छोड़
अन्यों के लिए उसका व्यय निरर्थक हैं ।

भाष्य -

महात्मा बसवेश्वर इस वचन में अर्थार्जन के मार्ग पर टिप्पणी करते हैं. अर्थार्जन के मार्ग पर टिप्पणी करते हैं. अर्थार्जन आवश्यक हैं. गुजारे के लिए, लेकिन, आवश्यकता से अधिक और अन्याय से धन नहीं जोड़ना चाहिए. जो हम अर्जित करते हैं उसपर जैसे हमारा अधिकार होता हैं. वैसाही समाज का भी अधिकार होता हैं. अर्जित धन से कुछ हिस्सा समाज के लिए खर्च करना चाहिए. इस्लामियों में जकात की धारणा इसी तरह की. है. कमाए हुए धनका उपभोग हम तभी ले सकते है. जब की हम उसे कुछ हिस्सा गरीबों को देते हैं. किसीको भूखा रखकर हम धनका उपभोग न करे. जो करते हैं, वे पशुसे बदतर हैं. इसे स्पष्ट करने के लिए महात्मा बसवेश्वरने जो दृष्टांत दिया हैं. अत्यंत मार्मिक और प्रभावकारी है.

कुत्ते का दूध अन्य प्राणियों के विशेषतः मनुष्यके काम नहीं आता. इसे हम देखते है. गाय का दूध मनुष्य के काम आता है. मात्र गाय के बछड़े के लिए वह दूध न होकर जैसे अन्यों के काम आता है. वैसे सन्मार्ग से आर्जित धन उस परिवार के साथ-साथ अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करनेवालों के भी काम आता हैं. पापीयों का धन कुत्ते के दूध के बराबर है. इस वचन से हमें यह सीख मिलती हैं कि अर्जित धनसे कुछ हिस्सा हमें उन गरिबों में बाँट देना चाहिए जिन्हें उनकी आवश्यकता हैं. महात्मा बसवेश्वरजी के समता का विचार क्रांति का विचार इस तरह के उनके वचनों द्वारा समाज में प्रसारित किया गया है.

- डॉ.इरेश सदाशिव स्वामी
- 'विद्या', १२, ब्रह्मचैतन्य नगर, बिजापूर रस्ता, सोलापुर - ४१३००४
०२१७-२३४२१९४, ०९३७१०९९५००

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिलमूल - संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यंतरण एवं हिंदी हाइकु अनुवाद -
डॉ.सी.जय शंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)
अध्याय ३. नीत्तार् पेरुमै (संत-महिमा)

गुणमेन्नुम् कुन्रेरि निन्ऱार् वेहुळि
कणमेयुम कातल अरिदु । (कुरल २९)

गुणी संत का
क्रोध क्षणिक भी हो
सह न पाएं ।

भावार्थ - सद्गुणों के पहाड़ पर चढ़े संत का क्रोध क्षणिक ही होता है, मगर उसको सहपाना असंभव है ।

अन्दणर् एन्बोर अऱ्बोर् मट्रेव्वुयिर्क्कुम्
शेन्दण्मै पूण्डोळु हलान् । (कुरल - ३०)
दयालु संत
करुणा दिखाते हैं
जग भर भी ।

भावार्थ - दयावान संत वे हैं संसार में सभी प्राणियों के प्रति करुणा दिखाते हैं ।

पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल

- टी.ई.एस.राघवन

फतेहपुर सीकरी

है 'फतेहपुर सीकरी' एतिहासिक प्रदेश ।
यहाँ के दुर्ग में शत्रु, करते नहीं प्रवेश ॥
फतेहपुर सीकरी के, दरवाज़े हि बुलंद ।
'जोधाबाई महल' औ 'मरियम महल' बुलंद ॥
'वीरबल महल' देखने लायक है भूभाग ।
'हिरन मीनार' देखने लायक है स्थल भाग ॥

जयपुर

निर्मित यह जयसिंह से, 'जयपुर' से विख्यात ।
यह पुर खाता है मेल, पेरिस पुर के साथ ॥
विद्याधर के नाम से हैं 'विद्याधर - बाग' ।
'सिटी पैलेस' महल में मंजिलें हैं औ' बाग ।
'सिसोदिया रानी महल,' 'हवा महल' द्रष्टव्य ।
नाहरगढ़ का किला औ', 'जयगढ़' है द्रष्टव्य ॥
शीश महल 'आमेर' में, दर्शनीय है स्थान ।
मंदिर उपवन यहाँ के, दृगगोचर हैं स्थान ॥
'जंतर मंतर' वेध की, शाला है द्रष्टव्य ।
खगोल की जानकारी, इसमें हो द्रष्टव्य ॥

- १, हनुमंतरायन मंदिर गली, चेन्नई - ६०००००५.

हमारा ई-मेल का पता

e-mail : antarbharati.patrika@gmail.com
raavas@rediffmail.com
लेख इस ई-मेल पर भी भेजे जा सकते हैं

आंतर भारती पत्रिका के ग्राहक बने / बनाएँ

संस्मरण भारती- १

जीवन साधना

श्रमिक विकास ट्रस्ट, आन्तर भारती संस्थाओ के आजन्म कार्यकर्ता श्री पुष्कर पंड्या का देहावसान

- सनत मेहता

जन्मभूमि खेड़ा से उच्च शिक्षाके लिए वडोदरा आकर एम.ए., बी.कॉम, बी.एड्. की उपाधियां लेकर वडोदरा और गुजरात के सुप्रसिद्ध एन.जी.ओ.में जीवनपर्यन्त सेवा देनेवाले निष्ठापूर्ण, सादगी जिनका जीवनमन्त्र था. स्वच्छ और प्रमाणिक जीवन जीनेवाले श्रीयुत पुष्करभाई पंड्या का दिनांक २६ नवम्बर २०१२ के दिन वड़ोदरा में ही देहावसान हुआ.

पुष्करभाई ने अपने सार्वजनिक जीवन की शुरुआत विद्याभ्यास के समय से विद्यार्थी (छात्र) प्रवृत्तियो से की थी. उच्च शिक्षा लेते लेते ही उन्होंने मजदूर प्रवृत्तियों में रूचि लेना शुरु किया था. उस समय श्री गोखले वडोदरा की मजदूर प्रवृत्तियों के केन्द्र मे थे. पुष्कर भाईने उनके सहायक के रूप में अपनी मजदूर प्रवृत्ति की शुरुआत की. बाद में आप प्रजा समाजवादी पार्टी के सक्रीय कार्यकर्ता बने. इस बीच आप स्व.हरिवल्लभ पारीख के संपर्क में आये, उनके आनंद निकेतन आश्रम में काम शुरु किया. यह आश्रम वडोदरा से लगभग १०० कि.मी. दूर कवाट के आदिजाति भारत जोड़ो आन्दोलन में सबने सक्रिय साथ दिया और साने गुरुजी की कल्पना को साकार करने के लिए वडोदरा में 'आन्तर भारती' संस्था का प्रारम्भ किया. पुष्करभाई कई साल तक इसके मंत्री और संचालक रहे. आज बच्चों की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था 'International Falcon Movement' के भारत के संयोजक रहे. उपाध्यक्ष भी बने थे.

इसी तरह १९८४ में गुजरात की बच्चों की प्रथम आधुनिक अस्पताल की स्थापना में अरुणा बहन मेहता, डॉ.भास्कर व्यास और श्री सुरेन्द्र जोशी के साथ पुष्कर भाई भी अग्रसर रहे और के.जी. मेहता चिल्ड्रन हॉस्पिटल के खजान्ची पद की जिम्मेदारी आपने जीवनभर निभाई.

इसके उपरान्त पुष्करभाई ने गुजरात स्तर की बीस साल से कार्यरत गैर शासकीय स्वयंसेवी संस्था संस्कार ''श्रमिक विकास संस्थान'' के मंत्री के रूप में आजीवन कार्यभार निभाया, जिसने बागरा, सुरेन्द्र नगर, में विकास के कार्य किए हैं. विस्तार में रंगपुर गाव में कार्यरत था. ५० के दशक में रंगपुर जाने के लिए ट्रेन या बस कुछ भी उपलब्ध नहीं था. सिर्फ पैदल ही वहाँ पहुंचा जा सकता था. पुष्करभाई को आदिवासी विस्तार की ग्रामोद्धार की प्रवृत्ति में विशेष अभिरूचि हुई.

उस बीच वडोदरा की प्रजा समाजवादी पार्टी ने समाज के लिए गैर राजनीतिक प्रवृत्ति के रूप में बालमंदिर से एस.एस.सी तक की पाठशाला शुरु करने का सोचा. इस विचारणा में श्री सनत मेहता के साथी, अरुणा मेहता, नरेन्द्र तांबे, नवनीत दवे और पुष्कर पंड्या ने स्कूल को आजीवन सेवा देने का निर्णय गुजरात के प्रसिद्ध शिक्षाविद श्री त्रिवेदी के सानिध्य में लिया और १९५६ में जीवन साधना का जन्म हुआ. हुजरात पागा विस्तार में खाली पड़े हुए सरकारी गोडाउनों में मध्यम वर्ग के बच्चों को सस्ती और अच्छी शिक्षा देने का उद्देश्य था. उस समय कुछ लोग उस स्कूल को पत्रावाला स्कूल कहते थे. पुष्कर भाई 'जीवन साधना' के अन्य स्थापकों में से एक थे. जीवन साधना में आवश्यक अनुभव और शैक्षिक योग्यतावाले अन्य स्थापक एक के बाद एक पांच पांच साल के लिए 'आचार्य का पदभार निभाये, ऐसी नावीन्यपूर्ण अवस्था थी. पुष्कर भाई भी आचार्य बने और निवृत्त होने तक यह जिम्मेदारी निभाई निवृत्ति के बाद भी जीवन साधना के साथ उनका नाता जीवंत रहा. 'जीवन साधना' को आज आधाशतक से ज्यादा समय हो गया.

१९६५ में मांगरोळ (जूनागढ) के गांधीवादी शिक्षाविद् श्री वीर सनतभाई मेहता की पुत्री सोहिणी बेन के साथ पुष्कर भाई की शादी हुई. रोहिणी बेन भी सामाजिक सेवा की शासकीय संस्था में प्रवृत्त थी.

आन्तर भारती की विचार धारा, श्रमदान, और पर्यावरण की रक्षा के लिए केवडिया में सरदार सरोवर पर नर्मदा निगम के सहकार में भारत के लगभग सभी राज्यों के २५००० युवक युवतियों के विराट शिविर का आयोजन पुष्करभाई ने अन्तिम व्यवस्थापक के तौर पर किया. विश्वभर में उस शिविर की सराहना की गई.

उसके बाद महाराष्ट्र की प्रसिद्ध संस्था ''आनन्दवन'' के स्थापक व समाजसेवी बाबा आटे के संपर्क मे ''जीवन साधना'' परिवार आया. ऐसी अनेक सार्वजनिक संस्थाओं के उपरान्त श्री पुष्कर पंड्या ने १९६२ से १९६८ तक वडोदरा नगरपालिका के स्कूल बोर्ड नगर प्राथमिक शिक्षण समिती, के चुने हुए सदस्य के रूप में कार्य किया. १९८२ से १९८४ तक खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के निदेशक पद पर रहे. १९८५ से १९९१ तक वडोदरा जिल्ला शिक्षण समिति के सदस्य के रूप में सेवाऐं प्रदान की.

इस तरह पुष्कर भाई ने अपने जीवन के पचास वर्ष शिक्षा, खादी ग्रामोद्याग, ग्रामोद्धार तथा भारत की एकता के प्रयत्न रूप आन्तर भारती व भारत जोड़ो प्रवृत्ति में काम करते रहे. प्रसिद्धि और कीर्ती की अपेक्षा किये बिना आप सही अर्थ में सेवा करते रहे.

पुष्कर भाई की सन्तानों में दो पुत्रियां संमिदा सोफ्टवेर एन्जीनीयर, तथा छोटी स्रोता बंगलूर के एक कॉलेज में सोशल वर्क अध्यापिका है.

आजीवन सेवक पुष्कर भाई पंड्या की सेवाओं को वन्दन करते हुए हम इनको अपनी श्रद्धांजली समर्पित करते हैं.

संघर्ष और सफलता की गाथा

बराक ओबामा

- डॉ.विद्या केशव चिटको

(गतांक से आगे...)

मिशेल ने हारवर्ड से लॉ की डीग्री ली थी. परिवार अच्छा रहा. बराक और मिशेल बीच बीच में मिलते रहे. दोस्ती बढ़ती गई और एक दिन मिशेल ने बराक को अपने घर रात्रि के भोज के लिए आमंत्रित किया. अपने माता पिता और भाई सभी से मिलवाया. वे भी बराक के बोलने चालने उसके व्यवहार और उसके भविष्य की योजनाओं को सुन कर उससे प्रभावित हुए थे.

बराक लॉ कॉलेज में आने पर पहले साल से ही वह छोटे छोटे लेख लिखवा करता था. अब वह Harvard Law Review का संपादक बन गया था. उसके काम की पद्धति को देखकर उसके चहेते और कुछ मित्रों ने उसे १९९० में प्रकाशन के अध्यक्ष पद के लिए उम्मीदवार बनाने पर जोर दिया पर बराक पहले तो झिझकता रहा कारण रुढ़िवादी और अलग अलग दल बन्दी गुटबन्दी राजनीति से जुड़े विचार करनेवाले अनेक थे. कैसे क्या किए जाए ? बराक पूर्णतः उदार मनस्क रहा. साथ ही तटस्थ भी. वह अपने निष्कर्ष निकालने से पहले समस्या के दोनों पक्षों को हमेशा सुना करता था.

रुढ़िवादियों को बराक का य दृष्टिकोण बहुत अच्छा लगा वह Law Review के लिए प्रेसिडेंट चुन लिया गा. यह पहला अफ्रिकन अमेरिकन व्यक्ति था जो रिव्यू का प्रेसिडेंट चुना गया था. उस के समय में Journal अच्छा निकल रहा था लोगों में उन्हें निष्पक्ष एवं व्यावहारिक व्यक्ति के रूप में पाया.

सन् १९९१ में बराक ओबामा लॉ स्कूल से ग्रैज्युएट हुआ. अब वह और भी काम करने के लिए, आकाश में ऊंची उड़ान भरने के लिए वह अब स्वतंत्र था.

संवैधानिक विधि के प्रोफेसर लारेंस ट्रैब उसे छात्र के रूप में पहले साल से ही जानते थे. उसे लॉ की डिग्री मिल जाने पर वह बराक ओबामा को अपना सहायक के रूप में अपनी कंपनी में रखना चाहते थे. उन्होंने लिखा है. ''सैंतीस वर्षों के अध्यापन में मुझे मिले दो अत्यंत प्रतिभावान छात्रों में से वह एक है.'' लॉ की परीक्षा पास कर लेने पर उसे अनेक स्थानों से निमन्त्रण मला.

वॉल स्ट्रीट संस्था उसे अपने यहां बुला रही थी.

U.S. अपीलीय अदालत में उसे लिपिक की नौकरी के लिए बुलाया गया.

उच्चतम न्यायालय में उसे लिपिक काम के लिए पूछा गया.

बार्नहिन व गॉलंट मैजर अधिवक्ता जुडसन मैन ने उसे फोन पर बातें की. बराक को कहीं न कहीं तो उसे काम से जुड़ना ही था. अब उसका कार्यक्षेत्र कानून ही था. बराक ओबामा ने कहा कानून राष्ट्र की ऐतिहासिक स्मृति के रूप में होता है. अपने अंतःकरण से बहस करनेवाले राष्ट्र के साथ करना लंबे समय तक संवाद बनाया रखना है.

बराकने मैनर की संस्था में नौकरी स्वीकार कर ली. कारण समुदाय संगठक के रूप में अपने अनुभव का प्रयोग कर सकता था.

१८ अक्टूबर १९९२ को बराक मिशेल रॉबिन्सन के साथ विवाहबद्ध हो गया. विवाहोपरांत वह शिकागो साऊथ साईड हाइड पार्क मे रहने लगा. अब उसके जीवन का एक नया अध्याय शुरु हुआ था.

ओबामा अब राजनीति में राजनीतिक क्षेत्र में धीरे-धीरे अपने कदम आगे बढ़ा रहा था. जमीन मजबूत करने के प्रयत्न में था. एलिनाय के प्राजेक्ट वोट शुरू में उसने १५०००० मतदाताओं (वोटर) के नाम, पता, व्यवसाय और उनकी अभिरूचि (हॉबी) की जानकारी देता रजिस्टर तैयार किया था जो विशेष रहा. अब तक किसी ने भी यह काम नहीं किया था.

शाम को वह युनिवर्सिटी में लॉ पढ़ाने जाता. वह युनिवर्सीटी में एक लोकप्रिय शिक्षक रहा. उसके छात्र उसका अत्यधिक सम्मान करते थे. उनकी बुद्धिमत्ता और अध्यापन क्षमता का बड़ा आदर करते थे.

गर्भपात युवा अधिकार एवं स्वीकृत कार्य पर दोनों-पक्ष और विपक्ष के तर्क प्रस्तुत करता. अपने लिए हुए मुकदमों के बारे में लिखता. इन कामों में व्यस्त रहता, इसके साथ साथ उसका अपना निजी लेखन कार्य भी करता. वह 'Dreams from my Father' पुस्तक भी लिख रहा था.

यह पुस्तक सन् १९९५ में क्राउन पब्लिसिंग ग्रुप, न्यू यार्क ने छापी. पुस्तक को लोकप्रियता प्राप्त हुई. वह बहुत खुश था. पर इस खुशी में भी कभी-कभी वह बहुत उदास हो जाता था. कारण विवाह के कुछ महीने पहले ही मिशेल राबिन्सन के पिता का निधन हो गया था. और उसके बाद उसके पितामह ग्राम्प्स को भी उसने खो दिया था. मां का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं चल रहा था. उसके लिए वह बीच-बीच में 'हवाई' जाया करता था. चिन्तित तो था ही पर अपने आप को काम में लगाये रखता. घर, परिवार, छोटी बच्ची और पत्नी मिशेल सबका उत्तरदायित्व उस पर था.

७ नवम्बर १९९५ को उसकी माता स्टेनली ऑन डनहास का निधन हो गया. वह

अपनी व्यवस्तता के कारण अंतिम क्षण में उसके पास नहीं रहा अंतिम क्रिया के लिए वह हवाई पहुंच गया था. ऑन का अंतिम संस्कार किया गया तथा उनकी अस्तियों को बराक एवं माया ने हवाई के ओहू के दक्षिण तटपर जल में अर्पित किया.

मां की मृत्यु से बराक पूरी तरह हिल गया था. अपने मन को वह स्थिर ही नहीं कर पा रहा था. मां के मूल्यों को आदर-सत्कार करने के लिए उसने आपको काम में झोंक दिया.

अपने पक्ष के लिए जी जान से काम करने में जुट गया. डोनेशन इकट्ठा करने के लिए उसने स्थान-स्थान के दौरे किए. अब उसने आयु के पैंतीस वर्ष पूरे कर लिए थे.

अमरीकी संसद में इलिनॉयस स्टेट सेनेटर अलीस पॉमर ने जोरदार प्रयत्न शुरु किया था. ओबामा भी उस सीट के लिए आगे बढा. उस जिले अमीर श्वेत और श्याम थे. वह चिकागो विश्वविद्यालय का क्षेत्र था जहां ओबामा कुछ वर्षों से रहता था और सीटी का साउथ एरिया जहां ज्यादा निम्न-वर्गीय गरीब का क्षेत्र था वहां ओबामा ने आर्गेनाइजेशन के रूप में काम किया था. इस कारण जीतने की संभावना अधिक थी. पॉमर किसी कारणवश पीछे हट गई. ओबामा इस प्रयत्न में रहा कि वह सेनेटर का पद पा जाय. वह लोगों से मिलता रहा.

ओबामा अपनी उत्सुकता से एलिनाय स्टेट सिनेट सीट जीत गया.

(क्रमशः)

पत्र भारती - १

श्री सदाविजयजी आर्य,

सादर अभिवादन !

आंतर भारती का जनवरी-फरवरी संयुक्तांत प्राप्त हुआ. पृष्ठ पलटते ही दुःखद समाचार वार्ता पढ़कर मन सुन्न हो गया. श्री सत्पुरे जी के बंधु का निधन बहुत बुरी हानि है. संबंधितों के निधन से तो परिवार पर आसमान ही टूट पड़ा है. शब्दों से सांत्वन करने पर भी उनकी हानि की पूर्तता संभव ही नही.

मैं उनके दुःख में सहभागी हूँ. ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे. सद्गति प्राप्त हो. मन की विषण्णता में मैं आंतर भारती में प्रकाशित किसी भी लेख को नहीं पढ़ पाई. फिर कभी.

विद्या के. चिटको, नाशिक

बाल भारती - १

चतुर मित्र

- राजा मंगळवेळेकर

बहुत पुरानी बात है. बदाद नामक शहर की घटना है. उस शहर में एक फकीर रता था. वह बहुत सज्जन था. प्रेमी था. लोगों का हितचिंतक था. इसलिए लोगों के मन में इस फकीर के प्रति आदर तथा भक्तिभाव था.

फकीर अपने गाव के बाहर, नदी के किनारे, धूनी रमाकर बैठता था. लोग वहाँ जाकर फकीर बाबा की सेवा करते तथा उपदेश लेते थे.

धीरे-धीरे संख्या बढ़ने लगी. भीड़ अर्थात् मन्नते मनौती अंधश्रद्धा आगई. भक्तालू ढोंगी भी आने लगे.

अपने स्वार्थ के लिए फकीर बाबा से फायदा उठाने के उद्देश्य से कुछ स्वार्थी लोग भी आने लगे. फकीर बाबा को नाना प्रकार से प्रश्न पूछकर तंग करने लगे. फकीर बाबा लोगों का हितचिंतक व सेवाभावी था परन्तु इन झूठे लोगों की भीड़ से वह परेशान रहने लगा उसके जाप भजन पूजा में विघ्न पड़ने लगा. पर यही उन स्वार्थी लोगो की समझ में नहीं आ रहा था.

फकीर बाबा दुःखी हो गया.

क्या करुँ उसकी समझ में नहीं आ रहा था. इन लोगों को आने से मना कैसे करुँ यह प्रश्न था. स्पष्ट बोलना तो कठिन था...

पर लोगों को आना जाना तो बन्द करना चाहते थे. अगर लोगों की भीड़ कम हा जाए तो ईश्वर चिन्तन में समय लगा सकते थे.

सदा मधुर बोलने वाले फकीर को क्या करें यह समझ में नहीं आ रहा था.

अन्त में हारकर अपने मन की बात एक सज्जन मित्र को बताई. मित्र बहुत चतुर था. उसने फकीर की चिंता समझ ली और झट से बोला -

''इसका तो सरल सादा उपाय है.''

'वह कौनसा ? फकीर बाबा ने पूछा'

बताता हूँ, पर सुनना चाहिए

'हूँ सुनूँगा.'

फकीर बाबा के इतना कहने पर मित्र बोला, ''जो कोई अमीर, धनवान, व्यापारी अपने स्वार्थ के लिए आते हैं उनसे पैसे मांगना शुरु कर दो.''

''और गरीब आऐं तो ?''

''उन को उधार देना शुरु कर दो''

''इससे क्या होगा ? फकीर ने पूछा. मित्र बोला देखो चमत्कार !''

और सच में ही चमत्कार हुआ.

फकीर बाबा ने पैसे मांगने शुरु कर दिए. धनिकों ने आना बन्द कर दिया उधर जाना बन्द कर दिया. उनके मन में डर बैठ गया कि अगर फकीर बाबा कुछ कमज्यादा मांगेंगे तो क्या करें इसलिए वहाँ आना बन्द कर दिया.

धीरे धीरे फकीर बाबा के आसपास स्वार्थी और झूठे लोगों की भीड़ कम हो गई. खत्म हो गई.

पैसों का मोह मनुष्य की मनोवृत्ती बदल डालती हैं.

भाषांतर : डॉ.मधुश्री आर्य

सफलता पूर्वक संपन्न

आशा और मित्रता के नए आयाम खोलने

पूर्वोत्तर भारत यात्रा

भारत जोड़ो के युवाओं का एकता अभियान

१५ मार्च से १६ अप्रैल तक

आन्तर भारती

शोध-बोध-प्रबोध

संकलक एवं संपादक

पु.वि.त्रिवेदी

२८, विवेकानंद सोसायषटी

यवतमाळ (महाराष्ट्र)

आन्तर भारती क्या है ? उसके कार्य कौन से हैं ? आज तक क्या-क्या कार्य हुए? कौन-कौन मुख्य कार्यकर्त्ता रहे. आज कौन है? इत्यादि संबंधी जानकारी मराठी में प्राप्त करने के लिए यह पुस्तक संग्रह की जानी हो तो रु. १८०/- मनिआर्डर से ऊपर लिखे पते पर भेजकर मंगवाएं -

चिंतन भारती - १

मिश्र विवाह के दिन आये, दिन कितने सुहाने आये

- अमर हबीब

तीस वर्ष पहले मेरा विवाह आंतरधर्मीय हुआ. मैं अंबाजोगाई का रहनेवाला हूँ. यह तालुके का गाँव है. उस जमाने में ऐसे विवाह कभी-कभार होते थें. मैं और मेरी पत्नी बाहर घूमने निकले तो हमें देखकर लोग खुसुरफुसुर करते थें. मुहल्ले की लड़कियाँ दरवाजों की दरारो से देखते हुए एक दूसरी को आँखो में इशारा करती रहती थीं. हमसे ना किसीने झगडा किया ना मारपीट की. परिवारवालोंने हमे भले ही न अपनाया हो परंतु हमारा 'ऑनर किलिंग' नहीं हुआ. परंतु हम लोग बहस का विषय मात्र निश्चित रूप से बन गए थें. यह तो होना ही था, हटकर राह जो चले थे हम !

१९९० के पश्चात् परिस्थिति में एकदम परिवर्तन हुआ. अंतरजातीय और अंतरधर्मीय विवाह बहुत बडे पैमाने पर होने लगे हैं. इसका कही पर भी कडा विरोध होते हुए नजर नहीं आता. ७०-७१ साल में हमने अंबाजोगाई में अंतरजातीय और अंतरधर्मीय विवाह करनेवालों का समारोह आयोजित किया था. गिनकर सत्रह दंपत्ति मिले. वर्तमान में इसकी सूची बनाने बैठे तो वह हजारों मे मिलेंगे. पिछले तीन वर्षों में मैं जहाँ रहता हूँ उस इलाके के पाँच पचास लडके-लडकियों के मिश्र विवाह हुए हैं. उनकी तरफ किसीने ध्यान ही नहीं दिया ! ना कोई चिल्लाए ना किसीने हो हल्ला मचाया ! नब्बे के पश्चात अंतरजातीय और अंतरधर्मीय विवाहों में बडे पैमानेपर वृद्धी हुई है.

वृद्धिके कारण -

जाति और धर्म की रुढियाँ और रीतिरिवाजों में पहले बहुत फर्क होता था अब वह फर्क उतना नहीं रहा. दैनंदिन जिंदगी में आनेवाली बहुत सारी बातें लगभग समान हैं. मसलन् वेशभूषा, पुरुषों के कपडो में समानता तो होती ही है. परंतु महिलाओं की वेशभूषा में काफी समानता आ गई है. दाहिना आँचल, बायाँ आँचल इन्हें अब फॅशन माना जाता है.

पढे-लिखवे, नौकरी करनेवाले लड़के लड़कियों की वेशभूषा को लेकर वे किस जाति के हैं ? इसे पहचानना कठिन हो गया हे. खान-पान के संदर्भ में विविधता है. परंतु अमुक लोग अमुक ही खाना खाते हैं ऐसा अब कह नहीं सकते.

शाकाहार और मांसाहार के स्पष्ट फर्क को अगर देखे तो भी अमुक जाति के सभी मांसाहारी हैं और फलाँ जाति के सभी शाकाहारी हैं ऐसा छाती ठोंककर कोई भी कह नहीं सकता. मैंने ऐसे बहुत से मुसलमानोंकों देखा है जो बिल्कुलही मांसाहार नही करते. मांसाहार करनेवाले ब्राह्मण तथा इतर तथाकथित ऊंची जाति के कितने दोस्त मैं दिखाऊँ ? जाति समूहों की परंपराएँ और रीतिरिवाजों की पूरी तौर से खिल्त मिल्त हुई है. पचास साल पहले रहन-सहन का फर्क स्पष्ट रुपसे दिखाई देता था. इसलिए अस्सी प्रतिशत समानता दिखाई देती थी. इसलिए दो जाति के लोग अब पहले से ज्यादा सहजता से इकठ्ठे रह सकते हैं. हर प्रांत की भाषा में फर्क होता है. वह भी अब धीरे-धीरे खत्म होते जा रहा है.

पहले अंतरजातीय अथवा अंतरधर्मीय विवाह हुआ तो उसके विरोध में कडी आलोचना होती थी. अब ऐसा नहीं होता. ज्यादा से ज्यादा इतना ही होता है कि परिवार उन्हें अपनाएगा नहीं. अगर उन्हें परिवारने अपनाया भी नहीं तो भी इन दंपत्तियों का कुछ भी नुकसान नहीं होगा. दोनों कमानेवाले होंगे तो उन्हें ज्यादा कष्ट नहीं होता मैंने देखा है जिन्हें परिवारने नहीं अपनाया ऐसे दंपत्तियोंको आगे चलकर उनके परिवारने उन्हें अपनाया है.

मिश्र विवाह के प्रमाण में वृद्धि होने का और एक कारण कहा जाता है, वह यह कि लड़कियाँ पढ रही हैं, उन्हें उनकी बराबरी का शिक्षा प्राप्त साथी उनकी जाति में नहीं मिलता. ऐसी लड़कियाँ बड़ी हिम्मतसे दूसरी जाति के वर का चुनाव करता है. कुछ जातियों में लड़कियों की संख्या बहुत कम हुई है. लड़के दुसरी जाति की लड़कियों को स्वीकारने लगे हैं.

ग्रामीण जीवन 'फेस टू फेस' होता है. वहाँ जाति के बाहर जाकर विवाह करना कठिन होता है. जैसे जैसे देहात से लोग शहर की ओर जाने लगे वैसे अंतरजातीय और अंतरधर्मी विवाह के प्रमाण में वृद्धि होने लगी है. २०१० की जनगणना के अनुसार देहात में रहनेवालों का प्रमाण घट गया है. शहरों में नये रोज़गारों के कारण लड़के और लड़कियाँ को नजदीक आने का अवसर मिला. उनका सानिध्य बढा इसलिए नये युवक-युवतियोंने अपना विवाह खुद तय किया. उनमें से अनेकोंने जात-पात धर्म के बंधनों को तोड दिया.

'ऑनर किलिंग' शहरो में होते हुए ज्यादा दिखाई नहीं देते. देहात के जातिबंद समाज के 'ऑनर किलिंग' जैसे शैतानी तरीके खुल्लमखुल्ला होते रहते हैं. जाति पंचायत का आस्तित्व देहात की व्यवस्था पर टिका है. फेस टू फेस समाज में

जाति का आग्रह बना रहता है. उस तुलना में गतिशील समाज में उनकी धार बोथरी होती है. ऐसा नहीं कि वह नष्ट होती है. सही देखा जाए तो खेती करनेवाले आदमी कम होते जा रहे हैं और वे उद्योग की ओर स्थालांतरण कर रहे हैं. इस तरह का निष्कर्ष निकाल सकते हैं, उनका स्वागत ही होना चाहिए. खेती की योजनाओं का बोझ बढ़ानेवाली योजनाओं का विरोध करना होगा. मिश्र विवाहों का समर्थन और आर्थिक परिवर्तनों का विरोध ये दोनों बातें परस्पर विरुद्ध हैं इस पर ध्यान देना चाहिए.

म.गांधी और डॉ.बाबासाहब आंबेडकर

डॉ.बाबासाहब आंबेडकर की लिखी 'इनहीलेशन ऑफ कास्ट' इस पुस्तक को इस साल पचहत्तर साल पूरे हुए हैं. यह पुस्तिका मराठी में भी उपलब्ध है. यह पुस्तक बाबासाहबने उनके यौवनावस्था में लिखी है. सही देखा जाए तो वह बाबासाहब का न दिया हुआ भाषण है. लाहोर की जाति तोडो मंडल ने एक समारोह का आयोजन किया था. उस समारोह के अध्यक्ष स्थानपर डॉ.बाबासाहब अध्यक्ष के रुप में विराजमान थे. बाबासाहबने अपना अध्यक्षीय भाषण संयोजकों के पास भेज दिया. उस पढकर संयोजक मंडली हडबडाई. उन्होंने उस समारोह कोही रद्द कर दिया. बाद में बाबासाहब ने वह भाषण पुस्तक के रुप में प्रसिद्ध किया. इस पुस्तक में बाबा साहबने जाति व्यवस्था की जबरदस्त आलोचना की है, जाति व्यवस्था को तहस-नहस करने के लिए आतंरजातीय विवाहों के कार्यक्रमों को सुझाया है. इस पुस्तक की मूल प्रति को पढना चाहिए.

म.गांधी ने ऐसा निश्चय किया था कि 'मैं केवल ऐसे ही विवाहों में उपस्थित रहूँगा जिस में से एक पिछडी जाति का होगा' उन्होंने उस निश्चयका हूबेहूब पालन किया. म.गांधीने जिनपर पुत्रवत प्रेम किया ऐसे उनके निजी सचिव महादेवभाई देसाई के विवाह के अवसरपर केवल इसी कारण वे उपस्थित नहीं रहें. म.गांधीने इंदिरा गांधी तथा फिरोज गांधी के विवाह के लिए अपने आशिर्वाद दिए.

म.गांधी और डॉ.बाबासाहब आंबेडकर इन दोनों का मिश्र विवाह को जबरदस्त समर्थन था. जिन्होंने जाति-धर्म की दीवारें बाँधी और मनुष्यों को उसमें कैद कर रखा. वे आज हारते हुए दिखाई दे रहे हैं. जिन्होंने मानवता की राह दिखाई, व्यक्ति स्वातंत्र्य को स्वीकारा और मिश्र विवाहों का समर्थन किया, ऐसे महापुरुषों के विचारों की आज जीत हो रही हैं. सनातनों की हार निश्चित थी क्यों कि उनके विचार इतिहास की यात्रा पर उचित नहीं थे. अंतरजातीय और आंतरधर्मीय विवाह ने व्यक्ति स्वातंत्र्य की जीतपर मुहर लगाई है. जो लोग

व्यक्ति स्वातंत्र्य के समर्थन में होंगे वे मिश्र विवाह का विरोध कर ही नहीं सकते.

कानुन में त्रुटियाँ :

मिश्र विवाह को हमारे कानून में पूरी मान्यता है. लड़का और लड़की दोनो बालिग हैं और वे विवाह करने के लिए तैयार हैं तो उस लड़का लड़की को कोई भी रोक नहीं सकता. हमारा कानून उनके साथ खड़ा है. एक बाधा केवल विशेष रुप से दिखाई देती है. वह यह कि लड़के और लड़कियाँ बालिग हैं, उन्हें विवाह करना है तो ऐसे समय में 'स्पेशल मॅरेज ॲक्ट' के अंतर्गत विवाह करना हो तो पहले नोटिस देनी पड़ती है. नोटिस देने का समय एक महिने का होता है. एक महिना राह देखी जाती है. अगर उस समय किसीने आक्षेप नहीं लिया तो एक महिने के बाद वे पंजीकरण पद्धतिसे विवाह कर सकते हैं. अगर इन्हीं युवकोंने धार्मिक पद्धतिसे विवाह किया तो उन्हें नोटिस पिरियड की आवश्यकता नहीं होती. उसके बालिग होने का सबूत पर्याप्त होता है. वैदिक, आर्य समाजी अथवा निकाह पद्धतिसे विवाह करना हो तो आप तुरंत विवाह कर सकते हैं. परंतु 'स्पेशल मॅरेज ॲक्ट' के अंतर्गत पंजीकरण पद्धतिसे करना हो तो फिर एक महिना प्रतीक्षा करनी पड़ती है. समझ में नहीं आता कि इस तरह का फर्क क्यों? नोटिस पिरियड का होना आवश्यक है तो दोनों पद्धति में समानता हो. अनेक दंपत्ति धार्मिक पद्धति से विवाह करना नहीं चाहते, पंजीकरण पद्धति से विवाह हो ऐसा वे चाहते हैं. परंतु नोटिस पिरियड की बाधा के कारण उन्हें मजबूरी में धार्मिक पद्धति से विवाह करना पड़ता है. कानून की इस पक्षपात की खामी को दूर करना चाहिए. जानकार को चाहिए कि इस मुद्दे की उलझन से राह निकाले. यह समय की माँग है.

जाति धर्मका बाँध शुरुवात से लीक हो रहा है. परंतु ९० के बाद उस बाँध का दरवाजा थोडा अधखुला सा हुआ है. अंतरजातीय और अंतरधर्मीय विवाह का प्रवाह खुला हो गया है इसका हमें स्वागत ही करना चाहिए.

मराठी

अमर हबीब

अंबर हाऊसिंग सोसायटी,

अंबाजोगाई ४३३५१७.

मो.९४२२९३१९८६

हिंदी अनुवाद

डॉ.विजया वारद - रागा

'ममता निवास'

नांदेड बिदर रोड, उदगीर ४१५१७

ता.उदगीर, जि.लातूर (महाराष्ट्र)

विशेष आलेख - १

स्त्री आंदोलन की शोकान्तिका

- सुधाकर जाधव

देहली में हुए घृणित सामुहिक बलात्कार प्रकरण पर पूरे देश में प्रतिक्रियाएँ हुईं और अभी भी हो रही हैं. देहली में उनकी तीव्रता अधिक थी. देहली में प्रतिक्रियाओं के ऊपर भी प्रतिक्रियाएँ उभरीं. ऐसी ही कुछ वरदानों के संदर्भ में, इससे पहले भी, जन असंतोष और क्षोभ प्रकट हुआ था. आज जनक्षोभ की तीव्रता अधिक अनुभव की जा रही हैं. स्त्री को भोग्य वस्तु और दासी मानने की सार्वत्रिक मानसिकता वाले देश में स्त्री अत्याचार के विरुद्ध हो रहे आंदोलन को स्वागतयोग्य ही मानना होगा. इस आंदोलन का सभी स्तरों पर स्वागत नहीं हुआ. उसपर काफी टिका-टिप्पणी हुई, यह बात खटकनेवाली है. फिर भी हमेशा स्त्री विरोधी मानसिकता से ग्रस्त रहनेवाली सनातन मंडली की ओर से आंदोलन का मुखर विरोध नहीं हुआ. आजतक ऐसे प्रकरण में जिस तरह की प्रतिक्रियाएँ बाहर आती थीं. उनमें बदल होने की बात इस वारदात के प्रति आयीं प्रतिक्रियाओं से स्पष्ट होती है. हुई घटना के लिए स्त्री ही उत्तरदायी है. उसका तंग कपडे पहनना उत्तरदायी है. उसका रात-बेरात घूमना उत्तरदायी है. इस तरह की हमेशा उभरनेवाली प्रतिक्रियाएँ इस समय व्यक्त नहीं हुईं, ऐसी काई बात नहीं है. वैसी प्रतिक्रियाएँ तो आयीं ही, लेकिन उनकी तीव्रता निश्चित ही कम थी. संगठित सनातन शक्ति की ओर से ऐसी प्रतिक्रियाएँ न आना और ऐसी शक्तियों का आज के आंदोलन में सहभागी होना. इन बातों को देखते हुए, देहली में उभरी प्रतिक्रिया के बाबत आशंका उभरना और इन 'आंदोलन के उद्देश्य के प्रति संदेह उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है. देहली में होने जा रहे चुनाव की पार्श्वभूमि पर, इस आंदोलन को हवा देकर उसपर अपनी रोटियाँ सेंक लेने का प्रयत्न कुछ दलों द्वारा किया जा रहा है. इस दृष्टि से भी इस आंदोलन की ओर देखा गया. राजनीति यह लोगों की, समाज की समस्याएँ सुलझाने का माध्यम है. ऐसी सस्याएँ सुलझाकर, उनका लाभ चुनाव में मिले. ऐसी इच्छा करना बुरा नहीं. लोगों की आर्थिक समस्या का समाधान करने के लिए किसी दल ने

आंदोलन चलाया तो इसे उसका कर्तव्य ही माना जाता है. फिर स्त्री की समस्या हाथ में लेकर आंदोलन करने पर उसके प्रति आक्षेप लेने का कोई कारण नहीं. स्त्रियों का प्रश्न राजनीतिक नहीं बनता, यह भी उनकी सस्याओं के समाधान ढूंढना कठिन होने का एक महत्वपूर्ण कारण है. यह ध्यान में न लेते हुए आज देहली के आंदोलन विरोधी टिका-टिप्पणी हो रही है. राजकीय दलों को स्त्रियों की समस्याओं की समझ और उनका समाधान करने की दृष्टि है इसपर संदेह उत्पन्न होना निश्चित ही गलत नहीं. देहली में या केन्द्र सरकार में भिन्न राजकीय दल की सरकार है वहाँ बलात्कार को मुद्दा बनाकर संघर्ष करना और गुजरात में हुए उसी प्रकार के गुनाह का किसी भी रूप में समर्थन करना, यह व्यवहार प्रश्न और संदेह दोनों को जन्म लेनेवाला है इसमें दो राय नहीं हो सकतीं. स्त्री प्रश्न पर लगातार सकारात्मक भूमिका लेनेवाले, स्त्रियों का हमेशा समर्थन करनेवाले, प्रमुखता से जब ऐसा संदेह व्यक्त करते हैं. तब इनके संदेह व्यक्त करने की पीछे कोई बुरा उद्देश्य नहीं यह ध्यान में आता है. घटना के पीछे की क्रुरता के कारण धधक उठीं स्त्री कार्यकर्ताओं के लिए यह विरोध समझ लेना, सहन करना कठिण जा रहा है. इसी प्रश्न पर प्रगतिशील भूमिका लेनेवालों के बीच यह दूरी स्त्री आंदोलन के लिए घातक सिद्ध हो सकती है. जिन्हें देहली में दर्शाया गया विरोध दांभिक लगता है और उनके लगने में सत्यता है ऐसा मान लेने पर भी स्त्रियों के प्रति सर्वाधिक संवेदनशील प्रश्न केन्द्र स्थान में आ रहा है और यह बात सकारात्मक है. यह बात उन्होंने नजरों से बिलकुल ओझल नहीं करनी चाहिए. दूसरी ओर स्त्रियों का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न अहरण पर आ रहा है ऐसा समझकर स्त्री आंदोलन के कार्यकर्ताओं ने भी अभिभूत नहीं होना चाहिए. चूँकि इस आंदोलन को आगे ले जाने का जिस तरह से प्रयत्न हुआ उससे एक बात तो साफ होती है कि इस आंदोलन में स्त्री प्रश्न की समझ बहुत ही तंग है. इस आंदोलन से जो विचार प्रवाह सामने आ रहा है वह स्त्रीवादी तो बिलकूल ही नहीं है. स्त्री के हीत का भी नहीं है. स्त्री पर बलात्कार हुआ का अर्थ उसके शरीर की दुर्गति हुई और अब उसका जीना मृत्यु से भी भयंकर है ऐस खुले आम विचार रखनेवाला शक्तिशाली प्रवाह इस आंदोलन में है. स्त्री को जीने लायक न रखने के स्वरूप का गुनाह होने के कारण गुनहगार को भी फांसी की सजा होनी चाहिए. यह मांग जोर पकडती जा रही है. यह गुनाह स्त्री

की स्वतंत्रता पर हमला है. यह समझ ही इस आंदोलन में नहीं है. मध्ययुगीन धारणाएँ छाती से चिपकाकर हो रहे आंदोलन द्वारा मध्ययुगीन और जंगली दंड की मांग आगे ठेली जा रही है. समाज की मध्ययुगीन मानसिकता यही, स्त्रियों के सम्मुख जो समस्याएँ हैं. उनका प्रमुख कारण है. इसकी समझ और भान न होनेवाला यह आंदोलन है. इस आंदोलन का समर्थन या विरोध करने के स्थान पर ऐसी समझ और भान उत्पन्न करने की चुनौती स्वीकार करने की आवश्यकता आज है. आंदोलन होते रहने से अपने आप जागृति आती है, ऐसा मानना नासमझी है. दिशाहीन आंदोलन का परिणाम भी तात्कालिक और दिशाहीन ही होता है. यह बात नहीं भूलनी चाहिए. इस आंदोलन के कारण कानून और कडे बनेंगे, दंड में वृद्धि होगी, स्त्री के लिए सार्वजनिक स्थान पर अधिक सुरक्षा की व्यवस्था भी होगी लेकिन जो होगा वह इस विचार से बिलकूल उलटा होगा किसी को समाज में विचरते समय सुरक्षा की आवश्यकता ही नहीं होनी चाहिए. स्त्री को सुरक्षा कौन देगा ? तो जिससे स्त्री सबसे असुरक्षित है वह पुलिस. पुलिस से स्त्री सुरक्षित होती तो, स्त्री को अंधेरा होने के बाद गिरफ्तार न किया जाए. ऐसा सर्वोच्च न्यायालय को स्पष्ट निर्देश और आदेश देने की आवश्यकता ही नहीं थी. प्रश्न कानून बनाने या उसे और कड़ा करने का नहीं है. कानून क्रियान्वित नहीं होता और उसे अंमल में लानेवाली यंत्रणा पुरुषी मानसिकता से ग्रस्त है. यह मानसिकता इस यंत्रणा तक ही मर्यादित नहीं है तो पूरे समाज की है. कानून से इस मानसिकता को बदला नहीं जा सकता. इसी कारण आंदोलन को रोष तथा रुख दूसरी ओर मोड़ना चाहिए. स्त्रियों को आज जिन परिस्थितियों से जुझना पड़ता है. जिस असुरक्षितता से वे ग्रस्त हुई हैं. उसके लिए उत्तरदायी न सरकार है. न राष्ट्रपति है. इसके लिए उत्तरदायी है इस देश के प्रत्येक घर का, और बेघर का भी, गृहपति इस वास्तविकता को स्वीकार करते हुए आंदोलन की दिशा बदली. तो ही स्त्रियों की दशा में अन्तर आएगा.

क्रमशः

अब अपनी रचनाएँ इस पते पर भेजें
डा.सी.जयशंकर बाबु
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग पांडीच्चेरी विश्वविद्यालय, कालापेठ, पुद्दुच्चेरी - ६०५०१४
चलध्वनि संपर्क : ०९८४३५०८५०६
ईमेल-editorbabuji@gmail.com / वेबसाईट-www.yugmanas.blogspot.com

चिंतन भारती - २

जाति व्यवस्था निर्मूलन की दिशा में एक कदम

- डॉ.नरेन्द. दाभोळकर

अध्यक्ष, अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति

जातिव्यवस्था का निर्मूलन यह एक अनुत्तरित यक्षप्रश्न है. भिन्न-भिन्न जाति समूह, जाति तथा अन्य जाति के प्रति आग्रही. संकुचित सिरे की और कई बार विद्वेषी भूमिका अपनाते हैं. यह बढती हुई असहिष्णुता समाज परिवर्तन का स्वप्न देखनेवाले संवेदनशील मनुष को बेचैन करती है. जाति व्यवस्था पर प्रभावी, मर्माघाती आघात करने का प्रयत्न करनेवाले डॉ.बाबासाहब आंबेडकर ने इसके प्रति तीन प्रभावी उपायों का सुझाव दिया था.

१. संविधान के माध्यम से ली गयी सामाजिक न्याय की भूमिका.

२. हिन्दु धर्म की चिकित्सा.

३. बडे पैमाने पर अन्तरजातीय विवाह.

मूल समस्या का विचार करने पर ये उपाय अलग-अलग नहीं तो एकसंघ ही लगेंगे. अर्थात् अन्तरजातीय विवाह करना यह विधायक, त्यागी और कृतिशील धर्मचिकित्सा है. चूँकि जाति का आधार ही ऊँच-नीचता तथा पावित्र-अपावित्र्य इन कल्पनाओं पर आधारित है और ये बातें तो स्पष्ट रूप से धार्मधिष्ठित हैं.

अन्तरजातीय और अन्तरधर्मीय विवाहों को संस्थात्मक रूप दिया, महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति ने (अनिस). विवाहपूर्व और विवाहोत्तर सारा दायित्व स्वीकारते हुए पिछले तीन वर्षों में दो सौ से अधिक अन्तरजातीय-अन्तरधर्मीय विवाह महाराष्ट्र अनिस ने सम्पन्न कराए हैं. इस स्तर के सभी आयाम महाराष्ट्र के सामने लाने के लिए २ और ३ फरवरी को लातूर में राज्यव्यापी परिषद का आयोजन हुआ. इन विवाहों को कायम स्वरूप की सहायता तथा संरक्षण देनेवाला मंच जिला स्तर पर हो यह आवश्यकता अनुभव की गयी. इस काम में सभी प्रगतिशील व्यक्ति, संगठन, संस्थाओं ने मिलजुल कर काम करने की आवश्यकता का प्रतिपादन किया गया. महाराष्ट्र में बीते वर्ष में ही 'ऑनर

किलिंग' की कुछ अमानुष घटनाएँ हुईं. जन्मदाता पिता को अपनी ही लडकी का जीवन समाप्त करते हुए निश्चित ही पीड़ा हुई होगी. लेकिन उससे भी अधिक भय इस बदनामी का लगा होगा जो पुत्री द्वारा अन्तरजातीय विवाह करने के कारण होगी. विवाह द्वारा जाति लांघना इसे अगर हम समाज में सहजता से स्वीकार की जानेवाली बात बना सके तो भी ऐसी हत्याएँ न करने की मानसिकता तैयार होगी. विचारमंथन में यह मुद्दा सामने आया.

इस परिषद द्वारा शासन और समाज के सामने कुछ मांगों के साथ घोषणापत्र रखा गया. उनमें एक है - अन्तरजातीय विवाहितों को ऐसे विवाहों के उपरान्त दी जानेवाली ५० हजार रुपयों की सहायता एक लाख रुपयों तक बढायी जाए. उसीके साथ, अपने धर्म कायम रखते हुए जो अन्तर धर्मीय विवाह करते हैं, उन्हें भी ऐसी सहायता दी जाए. ऐसे विवाहों को किसी के द्वारा सहायता करने का अर्थ होता है विपत्ति को आमंत्रित करना. उस परिस्थिति में परिणामकारक सहायता पुलिस यंत्रणा ही दे सकती है. इसके लिए प्रत्येक जिले में. शासकीय मान्यताप्राप्त अन्तरजातीय / अन्तरधर्मीय सहायता समितियों की स्थापना होना आवश्यक है. सहायता देने का दायित्व जिला पुलिस उपाधिक्षक दर्जे के अफसर को सौंपा जा सकता है. साथही ऐसे विवाहों के उपरान्त उत्पन्न होनेवाली दहशत गंभीर होने के कारण इस संदर्भ में स्वतंत्र कानून भी बनाना चाहिए.

विवाह सम्पन्न होने के बाद उसका पंजियन वर या वधू इनमें से किसी एक के गांव की स्थानिक स्वराज्य संस्था में किया जाए ऐसा कानूनी प्रावधान है. ऐसा विवाह हो जाने के बाद परिस्थिति इतनी स्फोटक हो जाती है कि वर-वधू दोनों के लिए यह असंभव हो जाता है कि वे अपने गांव पहुँचे. इसलिए विवाह पंजियनपत्र प्राप्त होने में देरी होती है और कई दिक्कतें पैदा होती हैं. इसलिए जहाँ विवाह सम्पन्न हुआ है वहां की स्थानिक स्वराज्य संस्था में या उस जिले के विवाह उपनिबंधक की ओर विवाह का पंजियन कराने की सुविधा होनी चाहिए. यह पंजियनपत्र अपने गांव की स्थानिक स्वराज्य संस्था को भेजने का दायित्व वर-वधु निभाएंगे. इसीके साथ 'स्पेशल मॅरेज ऍक्ट' के अनुसार विवाह की नोटिस एक महिना पहिले देना आवश्यक है. यह अवधि एक सप्ताह तक कम की जानी चाहिए. ऐसी ही कुछ और मांगें भी घोषणापत्र में अन्तर्भूत हैं.

अन्तरजातीय विवाह का अर्थ यह नहीं है कि कथित निम्न जाति की बहु या

दामाद को कथित उच्च जाति के परिवार ने किस तरह स्वीकार किया इस अहंभाव का प्रदर्शन करना. उसी तरह अन्य जाति को अपनी जाति के अनुरूप कर लेना भी नहीं है. इसकी अच्छी समझ होनी चाहिए. विवाह करनेवाले दोनों ने भी हिम्मत और दृढता के साथ विवाह का उत्तरदायित्व स्वीकार करना चाहिए. अन्तरजातीय विवाह असफल होते हैं यह अपप्रचार प्रत्यक्ष कृति द्वारा असत्य सिद्ध करना चाहिए. सहजीवन में स्त्री-पुरुष समता आवश्यक ही है. लेकिन अन्तरजातीय विवाह में उसका विशेष महत्व है. ऐसे विवाह जातीय पुरुषसत्ताक प्रभाव को नाकारनेवाले महात्मा फुले जैसे महानुभाव ने प्रतिपादित की हुई सत्यशोधक विवाह पद्धति से लगाना उचित होगा. इसके साथ-साथ ही ऐसी शादियों को आधार प्रदान करनेवाले परिवारों का समाज में अधिकाधिक संख्या में सामने आना आवश्यक है. सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है, राजनीति में विद्यमान जाति का प्रभाव कम करना. लेकिन यह प्रश्न आज अनुत्तरित ही है.

इस संदर्भ में अन्तरजातीय विवाह, यह एक प्रभावपूर्ण उपाय अवश्य है. लेकिन वह अधूरा है. अभी हमारे मन में 'जाती' कुंडली जमकर बैठी है. उसके विरुद्ध संघर्ष करने के लिए हमें प्रगतिशील वैचारिक उत्तराधिकार मिला है. इस विरासत के साथ ही परी दुनिया को वास्तव में एक बस्ती में रुपांतरित करनेवाली गतिमान समाजव्यवस्था भी अन्तरजातीय अन्तरधर्मीय विवाह के समर्थन में खडी होगी. यह बात साफ है. कई कारणों से. कई मार्गों से एकत्र आनेवाले युवा-युवतियाँ, जीवनसाथी चुनते समय निश्चित ही दोनों की शैक्षणिक, बौद्धिक, भावनिक तथा जीवन के प्रति विचारों की अनुरूपता, इन्हें ही महत्व देंगे और धीरे-धीरे निश्चित तौर पर जाति और धर्म पीछे छूटेंगे. जाति को लांघने की शुरुआत अन्तरजातीय-अन्तरधर्मीय विवाहों से होती है. यह सत्य है ही फिर भी यह यात्रा धर्मचिकित्सा, व्यक्ति स्वातंत्र्य के प्रति आदर, धर्मनिरपेक्ष समाजनिर्मिति तथा राष्ट्रीय एकात्मता सशक्त होना, इस क्रम से होनी चाहिए. जातिव्यवस्था का निर्मूलन और जाति-विरहित राष्ट्रनिर्मिति यही अन्तिम लक्ष्य होना चाहिए.

- मराठी सुगावा मार्च २०१३ के सौजन्य से

अनुवाद - ज्योतिराव लढ़के, चेतस, २२, बाजी प्रभु नगर,

नागपुर -४४००३३

परिचय-भारती

दुर्गम भारत जोडो

डॉ.बनते ही तुरंत जहाँ किसीभी प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं, ऐसे किनवट जैसे आदिवासी इलाके में कार्य करना आरंभ किया. आदिवासियों को आरोग्य सेवा प्रदान करने के साथ ही उनको अच्छी स्थिति में लाने के लिए उनका सामाजिक स्तर बढ़ाने के लिए जिन्होंने अपने कार्यका विस्तार किया ऐसे डॉ.अशोकजी बेलरवोडे के वैद्यकीय करिअर के संदर्भ में....

शहर से मेडिकल की शिक्षा पूरी करने के बाद साधारणतः डॉक्टर ग्रामीण भाग में जाने के लिए तैयार नहीं होते. ऐसी स्थिति में आदिवासियों के लिए कार्य करने की कल्पना करना भी कठीन होता है. डॉ.अशोकजी बेलरवोडे इसके लिए अपवाद हैं. औरंगाबाद से मेडिकल शिक्षा पूर्ण हुई और वे ठेठ पहुँचे किनवट. आदिवासियों को स्वास्थ्य सेवा देने का व्रत आपने लिया. उनके लिए सामाजिक उपक्रम शुरु किये. आज इस कार्य का वटवृक्ष में रुपांतरण हुआ है.

किनवट यह मरावाडा और आंध्र की सीमापर स्थित दुर्गम आदिवासी तालुका है. किसीप्रकार की सुविधाएँ इस तालुके में नहीं है. इस तालुके में काम करने के लिए १९९३ में डॉ.अशोक बेलरवोडेजी आए और आदिवासियों की आरोग्य सेवा में तल्लीन हुए. औरंगाबाद के सरकारी वैद्यकीय महाविद्यालय में शिक्षा लेते समय हॅलो 'मेडिकल फाउण्डेशन' शुरु किया. इस प्रकार से आपने आदिवासियों तक आरोग्य सुविधा पहुँचाने का कार्य आरंभ किया. मुहल्ले-मुहल्ले में जाकर सव्वासौ से भी अधिक शिविरों का अयोजन किया. उपचार सुविधा जहाँ नहीं थीं ऐसे इलाकों में प्लास्टिक सर्जरी, अस्थिरोग, नाक-कान गला (हलक) इन से संबंधित बीमारियों के शिविरों को आयोजित किया. साथ ही साथ परिवार नियोजन के तीन हजार से भी अधिक शस्त्रक्रियाएँ हुई. १९९३ में किल्लारी भूकंप के समय और २००१ में गुजराथ भूकंप के समय आरोग्य सेवा में आपका बहुत बड़ा योगदान रहा है.

उपचार के साथ ही दाई प्रशिक्षण, प्रथोपचार प्रशिक्षण, बचतगट प्रेरिका प्रशिक्षण देने की सुविधा किनवट तालुके में शुरु की. आपात्कालीन मदद और व्यवस्थापन केंद्र शुरु किये. इसी के साथ सरकारी योजनाओं की जानकारी आदिवासियोंतक पहुँचाने का कार्य शुरु किया. पाठशाला के परिधिसे वंचित आदिवासी बच्चों के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन करने का कार्य भी डॉक्टर ने अपने सहयोगियों की मदद से किया.

'हॅलो मेडिकल फाउण्डेशन' के कार्यक्रम में आपकी भेंट बाबा आमटेजी से हुई. इस भेंट से आपके कार्य की परिधि बढी. बाबा आमटेजी के 'भारत जोडो अभियान' में डॉ.अशोकजी सम्मिलित हुए. दुसरे 'भारत-जोडो अभियान' में आपको अखिल भारतीय समन्वयक की जिम्मेदारी निभानी पडी. 'नांदेड मेडिकल फाउण्डेशन' ने 'श्रीमती प्रमिलाताई भालेराव सेवा पुरस्कार' से डॉ. अशोक बेलरवोडेजी को सम्मानित किया है.

हिंदी- डॉ.विजया वारद - रागा, उदगीर -४१३५१७, मो. ९८९०२९८९१५

सोमनाथ श्रम संस्कार छावनी

१५ मई से २२ मई

गत अनेक वर्षों से इस श्रम संस्कार छवनी में पूरे भारत से सैकडों युवा सम्मिलित होते हैं. गर्मी को मात देकर रचनात्मक श्रम कर जीवन की दिशा प्राप्त करते हैं.

कई युवा यहां आकर समाज कार्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम कर गए / कर रहे हैं आप भी शामिल होइए पर पहले संपर्क कर अनुमति प्राप्त कर आएं

संपर्क : कौस्तुभ आमटे, आनंदवन (वरोरा) जि.चंद्रपुर (महाराष्ट्र)
मो. ०९९२२५५०००६
फोन - ०७१७६२८२२४५/ ०७१७६२८२०३४ / ०७१७६२८२२१३४
e-mail : anandwan@gmail.com

भारत जोडो की बैठक

दि. १८०५.२०१३

सोमनाथ श्रम संस्कार छावनी

सोमनाथ व्हाया मूल
जि.गढ़चिरोली (महा.)
संपर्क : डॉ.अशोक बेलखोडे
०९८२२३१२२१४

अब आंतर भारती (मासिक) आप वेब साईट पर भी हर माह के पहले सप्ताह में पढ़ सकते हैं.
www.antarbharati.org.in

आन्तर भारती ट्रस्ट की वेब साईट देखें सुझाव भेजें
www.antarbharati.org.in

समाचार भारती -१

राष्ट्र सेवादल के शिविर द्वारा विद्यार्थियों पर संस्कार

राष्ट्र सेवादल के शिविर द्वारा विद्यार्थियों पर अच्छे संस्कार डाले जाते हैं. शिविर से जाने के बाद अपने घरों में अच्छे संस्कार डालने का प्रयत्न करें शिविर में जो कुछ सीखा है अपने परिसर के विद्यार्थियों को भी सिखाएं ऐसा आव्हान नगर परिषद के उपाध्यक्ष साजीद खान ने किया.

राष्ट्र सेवादल की तरफ से साने गुरुजी रुग्णालय किनवट के आंगन में सात दिन का विज्ञान, साहस व छंद शिविर हुआ. शिविर के उद्घाटन सत्र में अध्यक्षीय समारोप करते समय बोल रहे थे.

प्रमुख अतिथि के रूप में मार्गदर्शन करते हुए गट शिक्षणाधिकारी अ.दि.आजेगावकर ने कहा, शिविर में अच्छी बातें, स्वावलंबन देशप्रेम, शिक्षा का महत्व आदि सिखाया जाता है. विद्यार्थियों ने यह बातें आत्मसात करके अपनी प्रगति करनी चाहिए. शिविर के मुख्य संयोजक डॉ.अशोक बोलखोडे प्रस्तावना करते समय बोले कि संयम, अनुशासन, और अन्तर्गत अनुशासन की आदत लगना चाहिए. विद्यार्थियोंने जाति धर्म के भेदभाव से दूर रहना चाहिए. मन की विशालता सीखनी चाहिए इसी उद्देश्य से इस शिविर का आयोजन किया है.

शुरु में साने गुरुजी की मूर्ति को सूत का हार पहनाकर, दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का प्रारम्भ किया. सूत्रसंचालन नितीन टापरे ने किया शिविर में १०० विद्यार्थियों ने भाग लिया. इसमें २५ से ज्यादा लड़कियाँ सहभागी थीं. विद्यार्थियों के प्रशिक्षण देने के लिए गंगासागर देशमुख साधन व्यक्ति बनकर आए थे.

कार्यक्रम में प्रभा जोशी, नगर सेवक गजानन बोलचेट्टीवार, अभय महाजन, शेतकरी संघटना के विश्वनाथ कानजोडे, सरपंच ज्योतीराम तुमराम, देवराव कुमरे, गुणवंत गेडाम की प्रमुख उपस्थिति थी.

(छायाचित्र मुखपृष्ठ २ व ३५ पर देखें)

भाषांतर : डॉ.मधुश्री आर्य
दै.लोकमत से साभार

तेलुगु साहित्यकार डॉ.रावुरी भारद्वाज को ज्ञानपीठ पुरस्कार

साहित्यिक क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण ''ज्ञानपीठ पुरस्कार'' तेलुगु के साहित्यकार डॉ.रावुरी भारद्वाज को देने का निश्चय हुआ. डॉ.भारद्वाज कवि, नाटककार, उपन्यासकार तथा विज्ञान लेखक के रूप में लोकप्रिय हैं. ''लेखक में सामाजिक जागृति होनी चाहिए ऐसा डॉ.भारद्वाज ने अपने साहित्य में सिद्ध किया. फिर भी उनकी साहित्य सेवा मनुष्य जाति के कल्याण के लिए है एंसा ज्ञानपीठ समिती ने अपने निवेदन में कहा. सन २०१२ वर्ष का यह पुरस्कार है.

तेलुगु साहित्य में अन्यन्त महत्व का योगदान डॉ.भारद्वाज की साहित्य संपदा ने दिया है. तेलुगु साहित्य के विविध विधाओं में लेखन के साथ साथ ३७ से अधिक लघु कथाएं लिखने का श्रेय उन्हें हैं. उनकी इस उल्लेखनीय साहित्यसेवा की वजह से ज्ञानपीठ पुरस्कार समितीने उन्हें पुरस्कृत किया है. इस बात की घोषणा समिती के अध्यक्ष श्री महापात्रा ने की

विशेष उल्लेखनीय बात यह है श्री भारद्वाज ने पारम्परिक शिक्षण प्राप्त नहीं किया. उसके बावजूद उनकी अनेक पुस्तकें विद्यापीठ के अभ्यासक्रम में हैं तथा कुछ पुस्तकों पर शोध कार्य भी हुआ. लघुकथा और उपन्यास के अन्तर्गत डॉ.भारद्वाज ने बच्चों के छः लघु उपन्यास लिखे. बच्चों की लघुकथा के पांच खंड प्रकशित हुए. तीन निबंध संग्रह, आठ नाटक और चरित्र लिखे. भारद्वाज के ''उपन्यास पकुदुरल्लू'', जीवन समरम्, इनुपु तेरा वेन्कुआ ''कौमुदी'' इन उपन्यासों को तेलगु साहित्य में बहुत लोकप्रियता मिली तथा इनका इंग्रजी तथा विविध भारतीय भाषाओं में अनुवाद प्रकशित हुए. उत्तम कथाकार के रूपमें प्रसिद्ध भारद्वाज जी कथा-कथन भी बहुत अच्छा करते हैं.

डा.भारद्वाज के जीवन में बहुत उतार चढाव आए पर उन्होंने तेलगु साहित्य सेवा का ध्येय सदा सामने रखकर कदम बढाए.

डॉ.भारद्वाज को इससे पहले साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लेंड नेहरू पुरस्कार, तेलुगु अकादमी पुरस्कार, बाल साहित्य परिषद पुरस्कार, आदि पुरस्कारों से सम्मानित करने के अलावा नागार्जुन विद्यापीठ ने मानद डाक्टरेट देकर उनकी साहित्य सेवा का सन्मान किया है.

लोकसत्त से साभार
भाषांतर : डॉ.मधुश्री आर्य

बालमहोत्सव वडोदरा

- हर्षद रावल

आन्तर भारती वडोदरा पिछले कई सालों से वर्ष में एक बालमेले का आयोजन करती है. इस वर्ष का बाल मेला ३ फरवरी २०१३ को लाल बहादुर शास्त्री वडोदरा में आयोजित हुआ. वडोदरा के जीवन साधना विद्यालयस के १५० श्रेयस विद्यालय के ३०, लालबहादुर शास्त्री विद्यालय के १०० और आन्तर भारती वडोदरा के १२० बच्चे मिलकर ४०० बच्चों ने हिस्सा लिया.

स्वागत समारंभ में आ.सनतभाई मेहता (अध्यक्ष, आन्तर भारती वडोदरा), आ.श्री.मनुभाई पटेल (पूर्व संसद) सुरेन्द्र जोशी मानदमंत्री आंतर भारती वडोदरा पधारे थे. प्रार्थना गीत, अभिनय प्रदर्शन और योगा के बाद बच्चे दो घंटों के लिए सर्जनात्मक प्रवृत्तियों में लग गए. मिट्टी काम का आयोजन एम.एस.युनिवर्सिटी के फाईन आर्टस की फॅकल्टीने किया. चित्रकारी के लिए संविदा, वर्षा, मंगला, वैशाली, कमलजीत ने बागडोर संभाली. और विजया पारस भाई ने संभाला.

सर्जनात्मक प्रवृतिओं का अच्छी तरह सर्जन का आनंद ले रहे थे. बच्चे इतने व्यस्त थे कि शिस्त का सवाल ही नहीं था. बाल मेला सफल बनाने में सब कार्यकर्ताओंने अपना योगदान दिया. बाल मेला सफल हुआ. बच्चों को दोप्रहर आन्तर भारती ने भोजन भी दिया.

वधु चाहिए

एक २९ वर्षीय ५ फिट ६ इंच ऊंचे, २१ दिस. १९८२ को जन्मे ६२ किलो वाले एम.ए.शिक्षाशास्त्र, गांधी विचार दर्शन में पदविका प्राप्त निसर्गोपचार में कुशल, आयुर्वेद तथा सहअस्तित्ववाद के अध्येता वर्तमान में प्राकृतिक चिकित्सा प्रशिक्षण एवं शोध संस्थान में व्याख्याता के लिए दर्शन, सामाजिक विज्ञान, आयुर्वेद के अध्ययन में तथा भारतीय सूफी संत, तथा रवीन्द्र संगीत में अभिरुचि रखने वाली सुगृहणी वधु चाहिए.

युवक शाकाहारी व निर्व्यसनी है. तथा राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों में सहभागिता करने वाला, सामाजिक सरोकार रखनेवाला पुरस्कार प्राप्त है. जाति तथा दहेज का बन्धन नहीं है.